

॥सदीया॥

卷之四

2540

यकसिधुविजेकिजिये॥ ॥ल१॥ ॥निपंडु॥ ॥प्र॥ ॥गोपनाय
कविजेकीजिये॥ ॥दि॥ ॥हेगोपनायकसिधुविजेकीजिये॥ ॥
थेंके॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥विश्राम॥ ॥दाने॥ ॥गोपनाय
कअवस्था॥ ॥पलिपि॥ ॥ल२॥ ॥पलिंडु॥ ॥वजनाथअवस्था
॥ ॥विश्राम॥ ॥दाने॥ ॥हेयदुसन्नमहमसवकाप्रणाम॥ ॥
केतुय॥ ॥दाने॥ ॥गोपनाथअवस्था॥ ॥पलिपि॥ ॥ल२॥ ॥
पलिंडु॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥विश्राम॥ ॥दाने॥ ॥गोप

नाथअवस्था॥ ॥शयन॥ ॥दाने॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥
पलिपि॥ ॥ल११॥ ॥पलिंडु॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥वि
श्राम॥ ॥दाने॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥शयन॥ ॥दाने॥ ॥
प्रणनाथआपकीइच्छा॥ ॥शृंगार॥ ॥हेप्रणनाथकछुवातुरी
कलाहमनहिजानतेहै-अमाकरणाचाहिये॥ ॥प्रणनाथअवस्था
॥ ॥विश्राम॥ ॥दाने॥ ॥सखीअवस्था॥ ॥हेस्वामीन॥ ॥हेस्वा
मीनरोहिनीकागर्भप्रसूतिहोनेलगा-दगनीबोलायदीजिये॥ ॥

हमको सखार करना चाहिये ॥ ५

फेरुये ॥ ॥ दाने ॥ ॥ गोपनायक अवस्था ॥ ॥ पल्लिपि ॥ ॥ लु १४
पल्लिदु ॥ ॥ गोपनायक अवस्था ॥ ॥ विश्राम ॥ ॥ दाने ॥ ॥ गोपना
थ अवस्था ॥ ॥ शयन ॥ ॥ दाने ॥ ॥ हे सखि शुभा अवहि हमारा प्रसू
ति होने का लक्षण दुवा नन्दजी का पाश विनिक के दगनी बोला उने
भेजिये ॥ ॥ लखा दुहाय ॥ ॥ दगनी आई वैठिये ॥ ॥ मोह नुये ॥
मोचा बुयके ॥ ॥ दाने हे वासु राहम सब कायणाम ॥ ॥ फेरुये
॥ ॥ दाने ॥ ॥ हे वासु राहम सब कायणाम ॥ ॥ फेरुये ॥ ॥ दाने

॥ ॥ गोपनायक अवस्था ॥ ॥ पल्लिपि ॥ ॥ लु १८ ॥ ॥ इति नृती
येके ॥ ॥ अथ चतुर्थ दिवसे ॥ ॥ पल्लिदु ॥ ॥ गोपनायक अवस्था ॥
विश्राम ॥ ॥ दाने ॥ ॥ गोपनायक विजे की जिये हम सब कायणाम ॥
फेरुये ॥ ॥ हे रोहिणी पादिलोक अवहि अभ्यन्तर जाये रहने हैं ॥ ॥ पल्लि
पि ॥ ॥ लु २० ॥ ॥ पल्लिदु ॥ ॥ हे सुदामा दिलोक सब अवहि दास्ये के
विश्राम करने हैं ॥ ॥ विश्राम ॥ ॥ दाने ॥ ॥ अवहमे अपाना पुत्र को
दुद पियावने हैं ॥ ॥ फेरुये ॥ ॥ दाने ॥ ॥ अवहमे अपाना पुत्र बाल

स्वामि श्री लक्ष्मण प्रसाद गोपनायक इत्यादि

खको यहि आसन मोर खते हैं ॥ फेरुया ॥ दाते ॥ हेरोहिणी
यमहा आश्रय हैं यवालख कामाता हम है कि यहि सुंदरी है की निश्र
येन हि दुवा महा आश्रय दुवा हैं ॥ रोहिणी आवे स्या ॥ फेरुया ॥
दाने ॥ यमहा आश्रय दुवा आसे आउते मे सा दात लक्ष्मी सरिषाठी
न अवहि हल सरीषा दात कउरा सरिषा नाक औ धक य स रिषा गहीर
नेत्र नयिका पुल सरिषा हात पा दया सितला उ सरिषा घेठ वेद न नि
स्तार सरि स्य क्या दुवा हैं काहा सैं आइ बडे आश्रय है ॥ हेरोहिणी

दिस वह मलोक का भाग्य सै वालख ववा हैं अवहि गोपुद नमनादि
ने वालख कार दाकर ना चाहिये ॥ हेरोहिणी और सब वालख का
रदाकर चुका अवहि दान एक विआम करत है ॥ विआम ॥
दाने ॥ अवह मे अयोना पुत्र को दुध पियावते हैं ॥ फेरुया ॥
दाने ॥ हे गोपनायक हम सब का प्राण ॥ हे गोप सत्तम यहि आ
सन पर विराजिये ॥ फेरुया ॥ दाने ॥ हे प्राणनाथ आज बडे दि
व्य सुंदरी एक भाहा आई के वालक लेके दुध पियाय के पिछे भयं क

रूपसेमर्गयी. हमलोककाभागसेमात्रवालखववाहै. आपनेदे
 प्रिये॥ ॥मंडल॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥
 पलिपि॥ ॥लु१५॥ ॥पलिंडु॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥विः
 श्रामा॥ ॥दाने॥ ॥गोपनायकअवस्था॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥
 अवहमेअपनापुत्रकोसोवायरषतहै॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥
 गोपनाथबलिये॥ ॥हेलोकसबएहकोहिवालयहआयाहोगा
 हमलोककाभागसेवालखववाहै॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥हे

गोपनायक २

ब्राह्मणजीहमसबकाप्रणाम॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥ब्राह्मणजी
 अवस्था॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥सिद्धिजीअवस्था॥ ॥पलिपि॥ ॥
 लु१७॥ ॥बलिंडु॥ ॥गोपनाथअवस्था॥ ॥विश्राम॥ ॥दाने॥ ॥
 आजयआपनावालखवकृतभारहुवा. सोकारणोएसजिमीनमोः
 रखतहै॥ ॥आजयवालखऐसाभारकाहेहुवा. फेरकुहुउत्पान
 होनेलगाकिमहाआश्चर्यहै. अवहमेअपनावालखकारक्षाकरः
 एकोमहायुधकाध्यानकरतहै॥ ॥फेनुया॥ ॥दाने॥ ॥हरि२

हमारा पुत्र कैसार हा है काहार हा है हमे खोज के देष ते है ॥ मंड
ला ॥ हरिश्चमारा वालख पुत्र का हा गया कि स्ने ले गया आवे क्या क
रे हरिश्च ॥ पेट बाया ॥ दाने ॥ गोपिनी अवस्य परम आनन्द रु
वा है ॥ मवा काय ॥ गोपान्तम अवस्य ॥ फेनुय ॥ दाने ॥
अवहम अपानास्याम सुन्दर पुत्र को इध पिता वने है ॥ फेनुय ॥
हे पुत्र हे श्याम सुन्दर तुम को कि स्ने ले गया क्या हुवा तुम हमारा प्रा
ण है तुम बिना कि स्ने र से रहे हम लोक का भाग्य से पाया ताराक्ष सम

गया तुम स जीव से मिला है ऐसि सदा भगवान् ने तुम को रक्षा करणा
चाहिये ॥ दाने ॥ अहो आश्चर्य य वालख का मुख मे आकाश
तारा गणा दिशा चतुष्टय अग्नि वायु सप्त समुद्र सप्त द्वीप पर्वत
वन स्थावर जंगम सब विश्व रूप देखने है यवडा आश्चर्य है ॥
फेनुय ॥ दाने ॥ हे मुनीश्वर हम सब का प्रणाम ॥ फेनुय ॥
दाने ॥ गोपनायक अवस्य ॥ पलिपि ॥ लु १२ ॥ पलिडु ॥
गोपनायक अवस्य ॥ विश्राम ॥ दाने ॥ हे गोप वृद्ध

मसवकाप्रणाम॥ ॥ हे गोपवृद्ध हमसवकाप्रणाम॥ ॥ फेरुय
॥ ॥ दाने॥ ॥ गोपनाथ अवस्था॥ ॥ मुनिश्वर अवस्था॥ ॥ हे यश
पुरुष हमसवकासाक्षात्प्रणाम॥ ॥ मुनिश्वरविजेकीजियेहमसः
वकाप्रणाम॥ ॥ फेरुय॥ ॥ दाने॥ ॥ हे गोपवृद्धविजेकीजियेहम
सवकाप्रणाम॥ ॥ फेरुय॥ ॥ दाने॥ ॥ गोपनाथ अवस्था॥ ॥ पतिः
पि॥ ॥ नुर०॥ ॥ पतिदु॥ ॥ गोपराज अवस्था॥ ॥ फेरुय॥ ॥ दाने
॥ ॥ हमारापुत्रनेकाडोकीचरमेखेलिकेसवसरीरकादोनेलेपिके
आयाहेअवहिहमनेदूधपिलावनेहे॥ ॥ हाशहेपुत्रअभिलेनानहि

हाजजलेगा॥ ॥ हाशहेपुत्रयसर्पलेनानहिदंशेगा॥ ॥ हाशहेपु
त्रयजलमेखेलनानहिकपरानिजेगा॥ ॥ हाशयकोंठामेखेलना
नहिकोंठालगेगा॥ ॥ हाशयओहाजायनोगौनेमारेगा॥ ॥ फेरुय
॥ ॥ दाने॥ ॥ हे गोपिनि सवलदिकासवकाशोभावसैसैहैशानन
हियसोदुखमानानहिरैगारुये॥ ॥ फेरुय॥ ॥ दाने॥ ॥ ररेपुत्रकी
हेमातिखातेहेसोतुमारालाधिभाइसवनेकहनेआयासैसाकरेनोतु
कोमारेगा॥ ॥ हेपुत्रदेखेदेखेनेरापुखमेमाटिखायाकाहेकिनहि

देखेंगे॥ ॥दाने॥ ॥अहोआश्चर्ययहबालखकासुखभीतरअप
नादेहसमेतसकलगोकुलसमस्तभुवनकोदेखनेहैयहमारासु
प्रहवाहैकिअथवाविलुकीमायाहैकिअथवाहमारीबुद्धिकोमो
हनेभ्रमनैहवाहैकिअथवामेराबालखकारेश्चर्यस्वाभाविकहैकि
अथवाएहिबालखईश्वरहैकिजन्कीमायानेपुत्रपत्नीआपनावि
रानाशत्रुमित्रादिमानिकेसंसारमोमोहहोताहैसोहिपरमेश्वरका
वरणमेशरणगतहोयकेहमारीप्रणामहै॥ ॥गोष्ठपालअवस्था॥

आजहमारादासीसबऔरकाममेलगाहैसोकारणहमआपैरुह
कामकर्तेहै॥ ॥अवहमेदुधपकावतेहै॥ ॥अवहिदहिमथ
नकर्तेहै॥ ॥मे॥ ॥श्यामसुन्दरहमाराबालखदुधसबपीयके
पूतनाघाटका॥वायुकात्रपसैंजवहरिलेगयेदुर्जनमारिकेतव
भयेदाकील॥१॥ ॥हायहमाराबालखआयपहुंचाहमेदुध
पिलावतेहै॥ ॥ऐहमारादुधवकायकेसबखरापहोनेलगाह
मजायकेसंहारकरतेहै॥ ॥हमारापुत्रनेभांडफोडकेकोहोगया

हमने षो जने है ॥ ॥ अरे देखो २ सवन वनी तखरा पकिया है हम
को हास हेंगे ॥ ॥ इने वहु न दुःख दिया है गोवां धे का डोरि से ओष
र मेवां धि के रष ने है ॥ ॥ ए डोरि से नहि पहुचा अवसर सेवा धने है ॥ ॥
भासाउं ॥ ॥ फेरये ॥ ॥ दाने ॥ ॥ नन्द जी चलिये ॥ ॥ फेरये ॥ ॥
दाने ॥ ॥ थैया थैयाराम कलना ता थैयारे ॥ ॥ फेरये ॥ ॥ दाने ॥ ॥
गोपनाथ विजे की जिये ॥ ॥ तिपे पि ॥ ॥ ७ ॥ ॥ भासाउं ॥ ॥ दि ॥ ॥ हे
गोपनाथ सिध विजे की जिये ॥ ॥ ल ३ ॥ ॥ पैसार ॥ ॥ ७ ॥ ॥ गोप

नाथ चलिये ॥ ॥ दि ॥ ॥ हे गोपनाथ सिध जाय चलिये ॥ ॥ थेंके ॥ ॥
गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ फे. दा ॥ ॥ गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ पलि पि ॥ ॥ ल
४ ॥ ॥ पलि दु ॥ ॥ गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ फे. दा ॥ ॥ गोपनाथ अव
स्था ॥ ॥ पलि पि ॥ ॥ ल ७ ॥ ॥ पलि दु ॥ ॥ गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ फे. दा ॥
गोपराज अवस्था ॥ ॥ पलि पि ॥ ॥ ल १० ॥ ॥ इति चतुर्थे क ॥ ॥ पोचम दि
वस्था ॥ ॥ पलि दु ॥ ॥ गोपनाथ क अवस्था ॥ ॥ विश्राम ॥ ॥ दा ॥ गो
पराज अवस्था ॥ ॥ पलि पि ॥ ॥ ल १२ ॥ ॥ पलि दु ॥ ॥ गोपराज अ

प्रणमः॥ ॥ हे ब्रह्मण्यो ह्यनीसवयद्विआसनपरविराजि
ये॥ ॥ मेरुदा॥ ॥ गोपराज अवस्था॥ ॥ शयना॥ ॥ गोपराज अ
वस्था॥ ॥ मेरुदा॥ ॥ गोपराज विजे कीजिये॥ ॥ निस्सार॥ ॥
यु॥ ॥ जासाउं॥ ॥ द्वि॥ ॥ हे गोपराज सिधुचलिये॥ ॥ लु१०॥
तिघंडु॥ ॥ प्र॥ ॥ गोपनाथ शीलिये॥ ॥ द्वि॥ ॥ हे गोपनाथः
सिधुचलिये॥ ॥ थेंके॥ ॥ गोपराज अवस्था॥ ॥ मेरुदा॥ ॥
गोपराज अवस्था॥ ॥ घलिमि॥ ॥ लु११॥ ॥ इति पंचमं वक्॥ ॥

यलिं॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥ फेदा ॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥ यलिं
 पि ॥ ॥ ॥ ॥ यलिं॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥ फेदा ॥ ॥ गोप
 राज अवस्था ॥ ॥ य. पि ॥ ॥ नु ॥ ॥ यलिं॥ ॥ गोपराज अव
 स्था ॥ ॥ फेदा ॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥ य. पि ॥ ॥ नु ॥ ॥
 यलिं॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥ फेदा ॥ ॥ गोपराज अवस्था
 ॥ फेदा ॥ ॥ गोपराज नन्द जी वलिये ॥ ॥ त्रिपि ॥ ॥ प्र ॥ भासा
 ड ॥ ॥ दि ॥ ॥ हे गोपराज नन्द जी सिधु जाय वलिये ॥ ॥ नु ॥

निडु ॥ ॥ प्र ॥ गोपराज नन्द जी वलिये ॥ ॥ दि ॥ ॥ हे गोपरा
 ज नन्द जी सिधु वलिये ॥ ॥ थेंके ॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥
 फेदा ॥ ॥ हे बोद्धा बोद्धाणी सव दम व का प्र णाम् ॥ ॥ फेदा
 ॥ हे गोप वृद्धि नन्द जी दम सव का प्र णाम् ॥ ॥ फेदा ॥ ॥ गोपरा
 ज अवस्था ॥ ॥ पूजा ॥ ॥ धन्य ॥ गोवर्द्धन अवतोर गोवर्द्धन का ये सा
 स रूप कहि के नदि जान ते हे आजु दर्शन पा जा धन्य ॥ हे गोवर्द्धन
 दम सव का साष्टांग प्रणाम् ॥ ॥ गोपराज अवस्था ॥ ॥ नन्द जी अव

स्वामि श्री लक्ष्मण गोप

स्य॥ ॥ हे वाहन सव अदान दक्षि आली जिये॥ ॥ हे वाहण वा
सणी सव ह म सव का प्रणाम॥ ॥ गोपना भ अवस्था॥ ॥ मो जन॥
गोपना भ अवस्था॥ ॥ फेर दा॥ ॥ हे वाहन लोक विजे की जिये ह
म सवा का प्रणाम॥ ॥ फेर दा॥ ॥ गोपरा जन नृ जी चलियो॥ वि-
धि॥ ॥ पु॥ ॥ भा साडा॥ ॥ दि॥ ॥ हे गोपरा जन नृ जी सिधु जाये च
लियो॥ ॥ लु२॥ ॥ ति-डु॥ ॥ पु॥ ॥ गोपरा जन नृ जी चलियो॥ ॥
दि॥ ॥ हे गोपरा जन नृ जी सिधु जाये चलियो॥ ॥ धे के॥ ॥ गोप

राज अवस्था॥ ॥ फेर दा॥ ॥ गोपरा ज अवस्था॥ ॥ प-धि॥ ॥ लु३
॥ प-डु॥ ॥ गोपरा ज अवस्था॥ ॥ फेर दा॥ ॥ हे कृष्ण हे महा बाहो
अति वृष्टि पाषाण वृष्टि ने गो कुल स पूरणा स हो ने लगा सं पूरणा प्र
णि अ चै न न्य हो म या-र नृ मुकुंद॥ कुंद ह वा अवहि क्या कर
णा-केवल नृ मारा मरण मो न हो यर हा का गो कुल का प्राणि सव
को रक्षा की जिये हे नाथ हे भक्त वत्सल हे प्रभो साहि२॥ ॥ कृ
ष्ण जी अवस्था॥ ॥ श्री कृष्ण जी अवस्था॥ ॥ दवरं धि॥ ॥ दवरं डु॥

कृष्णजी अवस्था॥ ॥ कृष्णजी अवस्था॥ ॥ धन्य रहे कृष्णजी आय
का सामर्थ्य जो नूतन वर्ष डमेर का ताल घने सात दिन तोर गो व
र्धन पर्वत डग से के एक पाद भिन बलिके गो कुल का प्राणि सब
को रक्षा करे ॥ ॥ धन्य रहे कृष्णजी ॥ ॥ कृष्णजी अवस्था॥ ॥ फे. दा ॥ ॥
गोपनाथ गमन कीजिये ॥ ॥ ति. घि ॥ ॥ प्रभा साड ॥ ॥ दि ॥ ॥ हे गो
पनाथ सिद्ध गमन कीजिये ॥ ॥ नु ॥ ॥ ति. दु ॥ ॥ घा ॥ ॥ गोपनाथ गम

न कीजिये ॥ ॥ दि ॥ ॥ हे गोपनाथ सिद्ध गमन कीजिये ॥ ॥ धे के ॥ ॥
गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ फे. दा ॥ ॥ धन्य रहे नन्दजी आय का पुत्र साक्षात् न
रायन की अंश है गर्ग मुनि श्रुति जानिके जथा र्थ आ ज्ञा दु वा. अन्ध धार
त नायु नू सार्थ के साहो गा ॥ ॥ फे. दा ॥ ॥ हे गोप सत्तम गिरि मान जाइ मे
हम सब का प्रणाम ॥ ॥ फे. दा ॥ ॥ गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ यलि घि ॥ ॥ नु
दा ॥ ॥ इति षष्ठ मेका ॥ ॥ सप्तम दिवसे ॥ ॥ पुलिंदु ॥ ॥ गोपनाथ अ
वस्था ॥ ॥ फे. दा ॥ ॥ गोपनाथ अवस्था ॥ ॥ गोपनाथ अवस्था ॥ ॥

विष्णुपूजायाय॥ ॥ हे वैकुण्ठनाथ हम सब का साष्टांग प्रणाम॥ ॥
गोपराज अवस्था॥ ॥ फे. दा॥ ॥ गोपनाथ विजे की जिये हम सब का
प्रणाम॥ ॥ फे. दा॥ ॥ हे पुत्रादिलोक सब अवहि अभ्यन्तर जाय रह
त है॥ ॥ पलिपि॥ ॥ लु१२॥ ॥ पलिङ्ग॥ जिशो दे अवस्था॥ ॥ फे॥
दा॥ ॥ हे पुत्रादिलोक अवहि अण एक विश्राम करत है॥ ॥ फे. दा॥
पुत्र अवस्था जाइये॥ ॥ फे॥ ॥ दा॥ हे रोहिण्यादि अवहि अभ्यन्तर जा
य रहत है॥ ॥ प. पि॥ ॥ लु१५॥ ॥ पलिङ्ग॥ ॥ हे रोहिण्यादि परिज

न सब अवहि क्षण एक विश्राम करत है॥ ॥ फे. दा॥ ॥ हे प्राणनाथः
हम सब का प्रणाम॥ ॥ हे प्राणनाथ सहि भासन पर विराजिये॥ ॥ फे
दा॥ ॥ धन्य शक सजी कामहि मावज श आश्चर्य हे धन्य॥ ॥ गोपना
थ अवस्था॥ ॥ पलिपि॥ ॥ लु१२॥ ॥ पलिङ्ग॥ ॥ गोपराज अवस्था॥
फे. दा॥ ॥ गोपराज विजे की जिये हम सब का प्रणाम॥ ॥ फे. दा॥ ॥
हे रोहिण्यादि सब अवहि अभ्यन्तर जाय रहत है॥ ॥ पलिपि॥ ॥ लु१२
पलिङ्ग॥ ॥ हे रोहिण्यादिलोक अवहि क्षण एक विश्राम करत है॥ ॥

२५/१५
 वर
 हेरुसदेवलेनद्रादिसवअवहिभोजनकरियो॥ ॥फेदा॥ ॥
 गोपराजअस्य॥ ॥शयन॥ ॥गा.पु॥ ॥लु११॥ ॥गा.३॥ ॥दागा
 पराजभवस्य॥ ॥फेदा॥ ॥प्राणनाथविजेकीजियेहमसवका
 पुणाम्॥ ॥फेदा॥ ॥हेरोहिन्नादिसवअवहिअभ्येतेजायेरह
 नहे॥ ॥च.पि॥ ॥लु१३॥ ॥इतिअष्टमंका॥ ॥

स्वस्ति श्रीसम्वत् १८५६ वैशाख शुद्ध १ रोज ध्वजपुष्प श्रीलक्ष्मिचरित्रया व्याघ्रसारं भया
 जदीननन्दपतिजश्वदामानविरकद्विपतिमुलाके शुभ ४४

अज्ञानतिमिरांदस्य ज्ञानां जनसलाकया च सूर्यमिलितं यत्नतस्मिन्निगुहवेनमः॥१॥

स्वस्ति

स्वरित श्री स वे प्रि मा जो ज्ये इत्यादि सकल गु न गरि ष य ज भा दो सा म थ उ प्रा त
त्यम्ब त्र १८ ह ट राल सा के लम्ब त्र १८ ३ ने पालु स्वम्ब त्र १८ १ वै सा व सुदि १२
स्वरित श्री सं म्ब त्र १८ १ वै सा व सुदि १२ ज ३ ध खु दु श्री ल वरि क या पा
षं आ र भा या डा दि न न द प नि ज ख दा मा न वि र का दि प डि भु ला दे सु भ
अं शा ना नि मि रा द स्य शा ना ज न स ला क या य द्य भु मि लि त य न ता सि श्री गुरु

अंश आ स र्थ यह वालष का मुष भितर अपा ना दे ह व मे त सकल गु कु ल
स म रत भु व न को टे प ते हे यह वालख का स्व प्र फु वा हे कि अ था वा वि सु मा
या है कि अ थ वा ह मा रि वु वि को मो ह ने भु म न ह वा है कि अ थ वा मे रा वालष का
रे स्व र्थ च्चे भा वि क हे कि अ थ वा र हि वालष इ च्च र व है कि ज न कि मा या
व ने पु क्त प नि आ प नि वि रा ना स क्तु मि त्रा दि मा नि के सं ब्रा र मो ह हो ता है
हो हि पर मे स्वर का य द्य मे सर ना ग न हो यह मा रा पु ना म हो ॥४

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगाकांचनं वैदेहिहरनं जटाहिमरुतं सुगन्धसंभाषनं ॥
लीलागृहहरनं समुद्रतरनं लंकापुरीदाहनं यत्प्राप्तं रावनकुम्भकरागमनं इत्यादिगमाय सांग ॥

सत्य १९०५ साल मिति वैशाख वदि १२ तिथि ४ शुक्ल

स्वस्ति श्री गणेशाय नमः साधे च नवति कन्यायाः ॥ एतन्मन्त्रो भवेत्तै वैशेषतः यथा जे

मन्त्रैः न च वक्ष्यामि ॥

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृगाकांचनं वैदेहिहरनं जटाहिमरुतं सुगन्धसंभाषनं ॥

लीलागृहहरनं समुद्रतरनं लंकापुरीदाहनं यत्प्राप्तं रावनकुम्भकरागमनं इत्यादिगमा

येन ॥ १ ॥ श्री

स्वस्ति श्री सर्वोपमांजोगंतादिसकलपुण्यांरिराजभाषासार्थ श्री भूमादेवलीस्मितास
कै ईत श्रीसेवकवीहृदारकासिनाथजीसको सुभ आषमन पूर्वक पत्रीमर्द आगे ती
हाको समाचार भलो हाहा

को को समाचार दिखाने उपाय